❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य समाज की सभी चल रही योजनाओं प्रकल्पों, वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन, सोशल मिडिया हैंडल्स का उपयोग करने हेतु
8750-200-300
मिस्ड कॉल करें
SMS पर प्राप्त होने वाला लिंक खोलें

वर्ष 48, अंक 40 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 जुलाई, 2025 से रविवार 03 अगस्त, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों का समापन

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025

स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली

तैयारियों हेतु सार्वदेशिक सभा, ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति एवं दिल्ली सभा द्वारा समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं सहित विभिन्न महत्वपूर्ण संगठनों के

अधिकारियों एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं की विशाल सार्वजनिक बैठक सम्पन्न

नए युग की ओर बढ़ता हुआ आर्य समाज 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का सपना करेगा साकार - सुरेन्द्र कुमार आर्य

महासम्मेलन में हर प्रकार से सेवा और सहयोग के लिए एम.सी.डी. रहेगी तत्पर - राजा इकबाल सिंह, मेयर

भूतो न भविष्यति के रूप में सिद्ध होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 - सुरेशचंद्र आर्य, प्रधान

महर्षि की शिक्षाओं तथा आर्य समाज के सिद्धांतों को विश्व स्तर पर प्रचारित करना लक्ष्य - स्वामी देवव्रत

प्रान्तीय सभाएं उत्साहित : नदियां बन सम्मिलित होंगी महासम्मेलन रूपी सागर में - प्रकाश आर्य

सम्मेलन के बड़े मिशन में सबकी भागीदारी आवश्यक, स्वागत हेतु दिल्ली पूरी तरह तैयार- धर्मपाल आर्य

65 एकड़ मैदान में बनेंगी भव्य, विशाल और विराट महासम्मेलन की समस्त व्यवस्थाएं - विनय आर्य

पूरे भारत वर्ष से 20 हजार से अधिक आर्यवीर, वीरांगनाओ की होगी भागीदारी - डॉ सत्यवीर शास्त्री

लघु से लघु और विशाल से विशाल आयोजन की सफलता के पीछे प्रेरणा की शक्ति, संगठन शक्ति, सही योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन, सेवा भाव और समर्पण सहित आर्थिक सहयोग आदि की शक्तियां कार्य करती है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती एवं आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के 2 वर्षीय आयोजनों के समापन समारोह के रूप में 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 तक स्वर्ण जयंती पार्क सेक्टर 10, रोहिणी, दिल्ली में चार दिवसीय विशाल, विराट अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को लेकर संपूर्ण भारत और विश्व के आर्य समाज में अत्यंत उत्साह की लहर है और क्यों ना हो क्योंकि यह एक अवसर ही इतना अदभुत, अनुपम है जब पूरा देश और दुनिया के 40 देशों के आर्य प्रतिनिधि एक समय, एक ही स्थान भारत की राजधानी दिल्ली में एकत्रित होकर पूरी मानव जाति को सुदिशा प्रदान करने के लिए ऐतिहासिक कार्यक्रम करेंगे। इस भूतो न भविष्यति के रूप ऐतिहासिक अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को लेकर 27 जुलाई 2025 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से विशाल सार्वजनिक बैठक आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1, नई दिल्ली स्थित सभागार में सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

- शेष पृष्ठ 3-4-5 एवं 7 पर

देववाणी-संस्कृत

युद्ध द्वारा परमात्मा का बन्धुत्व

वेद-स्वाध्याय

अभ्रातृव्यो अना तवनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि। युधेदापित्वमिच्छसे।।
-ऋ० 8।21।13; अथर्व० 20।114।1
ऋषिः- काण्वः सोभरिः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः - निचृदुष्णिक्।।

शब्दार्थ - **इन्द्र** = हे परमेश्वर! **त्वम्** = तुम **जनुषा** = जन्म से ही, स्वभाव से ही **अभ्रातृव्यः** = शत्रु-रहित **अनापिः** = बन्धु-रहित **अना** = नियन्तृ-रहित **असि** = हो, **सनात्** = तुम सनातन हो, सनातन से ही ऐसे हो, पर तुम **युधा** = युद्ध द्वारा इत् = ही **आपित्वम्** = बन्धुत्व को **इच्छसे** = चाहते हो।

विनय - हे परमेश्वर! तुम्हारे लिए न कोई शत्रु है और न कोई बन्धु है। तुम जिस उच्च स्वरूप में रहते हो वहाँ शत्रुता और बन्धुता का कुछ अर्थ ही नहीं। तुम्हारे लिए कोई नायक या नियन्ता भी कैसे हो सकता है? तुम्हीं एक मात्र सब जगत् के नियन्ता हो, नेता हो। तुम जन्म से, स्वभाव से ही ऐसे हो। 'जनुषा' का यह तात्पर्य नहीं कि तुम्हारा कभी जन्म होता है। तुम तो सनातन हो, सनातन रूप से ही शत्रुहित और बन्धुरहित हो, पर निर्लिप्त होते हुए भी तुम हमारे बन्धुत्व (आपित्व) को चाहते हो और इस बन्धुत्व को तुम युद्ध द्वारा चाहते हो, युद्ध द्वारा ही चाहते हो। अहा! कैसा सुन्दर आयोजन है! तुम चाहते हो कि संसार के सब प्राणी सांसारिक युद्ध करके ही एक दिन तुम्हारे बन्धु बन जाएँ, तुम्हारे बन्धुत्व का साक्षात्कार कर लें। सचमुच बिना लड़ाई के मिली सुलह, बिना सङ्घर्ष के मिली प्रति, बिना संग्राम के मिली मैत्री नीरस है, फीकी है, अवास्तविक है, उसका कुछ मूल्य नहीं है। बन्धुता तो अबन्धुता की, लड़ाई की सापेक्षता में ही अनुभूत की जा सकती है। इसीलिए हे मेरे जगदीश्वर! मुझे अब समझ में आता है कि तुमने कल्याणस्वरूप होते हुए भी इस अपने जगत् में दुःख, दर्द, दारिद्र्य, रोग, क्लेश, आपत्ति, उलझन आदि को क्यों उत्पन्न होने दिया है। अब समझ में आता है कि तुमने इन कठिनाइयों को खड़ा करके प्राणियों के जीवन को निरन्तर युद्ध मय, संघर्षमय क्यों बनाया है। सचमुच, यह सब-कुछ तुमने इसलिए किया है कि हम इन बाधाओं को जीतकर, इन कठिनाइयों, उलझनों को पार करके तेरे बन्धुत्व के रसास्वादन के योग्य बन जाएँ। तू तो अब भी हमारा बन्धु है। हममें से जो तेरे द्रोही कहे जाते हैं, जो नास्तिक हैं- उनका भी तू सदैव एक-समान बन्धु है (और वास्तव में किसी का भी बन्धु या शत्रु नहीं है) तो भी तेरी उस बन्धुता का अनुभव-तुझे बन्धु-रूप से पा लेने का परमानन्द-हमें तभी मिल सकता है जब हम संसार के इस परम विकट युद्ध को विजय करके तेरे पास आ पहुँचें। तू चाहता है कि आज जो तुझसे बहुत दूर है, तेरा कट्टर द्वेषी है, वह युद्ध करके एक दिन तेरा उतना ही नजदीकी और उतना कट्टर बन्धु बन जाए, अतः अब मैं तेरे बन्धुत्व पाने के समर में ही कमर कसे खड़ा हुआ अपने को पाता हूँ; जितनी बार मरूँगा इसी समर की युद्धभूमि में मरूँगा और अन्त में तेरे बन्धुत्व को पाकर ही दम लूँगा। यही तेरी इच्छा है, यही तेरी मुझ से प्रेममय इच्छा है।

-: साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

श्रावणी पर्व पर क्यों आवश्यक है वेद के स्वाध्याय का व्रत

प्राचीन काल में वेद तथा वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय का दैनिकचर्या में विशेष नियम था। उस समय राजा-प्रजा, गुरु-शिष्य, माता पिता, बहन-भाई सब लोग नियमित रूप से स्वाध्याय करते थे। तभी तो उस समय चारों तरफ सुख-शांति समृद्धि का वास था, शारीरिक, आरोग्यता, पारिवारिक प्रसन्नता, सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा और निष्ठा व्याप्त थी। समाज में भय, चिन्ता, निराशा, अवसाद का कोई कारण नहीं था, कालान्तर में हम वेद ज्ञान की अविरल धारा से दूर होते गए, जिसके कारण व्यक्ति-परिवार, समाज देश और दुनिया में दुःख-पीड़ा और अशान्ति बढ़ती चली गई। 19वीं सदी के महामानव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने मानवमात्र के कल्याण हेतु, ईश्वर की वाणी वेदों से हमारा नाता जोड़ा और उदघोष किया ''आओ, लौट चलें वेदों की ओर'' परिणाम स्वरूप आज हम वेदज्ञान का अमृतपान कर अपने जीवन को समुन्नत कर रहे हैं। आज जब हम महर्षि की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों के समापन समारोह के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 मना रहे हैं तब श्रावणी पर्व पर वेदज्ञान के स्वाध्याय का संकल्प लेकर आत्मकल्याण के पथ पर आगे बढ़ें...

वर्तमान में मनुष्य भौतिक उन्नति के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ता जा रहा है। किंतु वैदिक मूल्यों की सांस्कृतिक संपदा को कुछ इस तरह पीछे छोड़ते जा रहा है, जैसे रेल यात्रा के समय स्टेशन पीछे छूटते जाते हैं। उन्नति की अंतहीन दौड़ में वैदिक संदेशों को हमने पढ़ना-सुनना, अमल में लाना जैसे बिल्कुल छोड़ ही दिया है, जिसका परिणाम यह निकला कि आज इनसान वैभव के शिखर पर बैठकर भी अशांत है, बेचैन है, व्याकुल है। सारे साधन मनुष्य के पास हैं, लेकिन फिर भी इनसान खीझा हुआ, क्रोध में भरा हुआ, तनाव से तना हुआ, चिड़चिड़ा स्वभाव बनाए हुए पूरे ब्रह्मांड से असंतुष्ट नजर आता है। आज परिवार, समाज, देश तो क्या मनुष्य अपने स्वयं के गौरव की रक्षा भी नहीं कर पा रहा है। वह मारा-मारा फिर रहा है। इनसान भूल चुका है कि वह ईश्वर का अमृत पुत्र है, सबका पिता परमात्मा उसका भी पिता है, जो संसार का सबसे बड़ा राजा है और राजा के पुत्र में भी संसारिक राजा की भांति जीवन जीने की संभावना उसके गुण, कर्म और स्वभाव को अपनाने पर ही प्रबल होती है।

ऋग्वेद के दसवें मंडल के अड़तालीसवें सूक्त का पांचवा मंत्र है-

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन।।

मंत्र का भावार्थ- मैं इंद्र हूं, समस्त ऐश्वर्यों का स्वामी हूं, मैं किसी से हारने वाला नहीं हूं, मैं मृत्यु से भी पराजित नहीं होता। (ईश्वर भक्त मृत्यु के भय से मुक्त होते हैं) इसलिए मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए तथा कल्याणकारी ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए मुझसे (प्रभु से) कामना करो। हे मनुष्यो! मेरे प्रति (प्रभु के प्रति) मित्रभाव को कभी क्षीण मत होने दो।

मंत्र का पहला चरण -**अहम् इन्द्रः न परा जिग्य** अर्थात् मैं इंद्र हूं, राजा हूं, किसी से हारने वाला नहीं हूं। वेद की यह घोषणा हम मानकर चलें कि हम किसी से पराजित नहीं हो सकते-न अपनी समस्याओं से, न बीमारियों से, न कष्ट-क्लेशों से, न भय दिखाने वाले तत्वों से, न निराशाओं से। अगर मनुष्य अपनी धारणा यह बना ले कि मुझे किसी से हारना नहीं है और उसी के अनुसार कार्य व्यवहार करे तो वह अपने क्षेत्र में विजय प्राप्त करता रहेगा। किंतु अगर किसी कारण से उसके भीतर निराशा का जन्म हो गया तो चाहे वह शरीर से कितना ही बलवान हो, धनवान हो, गुणवान हो, उसे भीतर तक हिलाकर रख देगी, उसकी सफलता को निराशा रोककर खड़ी हो जाएगी।

एक व्यक्ति हमेशा चारपाई पर ही लेटा रहता था, कभी उठता नहीं था। उसकी बीमारी का कुछ पता नहीं चल रहा था। बाद में पता चला कि उसकी बीमारी क्या थी? दरअसल एक बार वह आदमी कुएं पर पानी पी रहा था, तो उसे पानी पिलाने वाली बहनों ने मजाक में कह दिया कि तेरे पेट में छोटी-सी छिपकली चली गई, जबकि वह असल में एक छोटा सा पत्ता था, जो कुएं के पास खड़े पेड़ से गिरा था और उसके पेट में चला गया। उस आदमी के दिमाग में यह बात बैठ गई कि मेरे पेट में छिपकली चली गई, अब मैं ठीक होने वाला नहीं हूं। छः महीने तक वह व्यक्ति बिस्तर पर रहा और जब किसी से ठीक नहीं हुआ तो एक वैद्य ने, जिसकी गर्दन कांपती रहती थी, उस बीमार व्यक्ति का पूरा इतिहास सुना और सुनने के बाद कहा कि बेटा! अब तू ठीक हो जाएगा, क्योंकि अब छिपकली के निकलने का समय आ गया है।

उसने उसकी बहन को बुलाया और कहा तू आज फिर उस कुएं पर जाकर इसे पानी पिला, शायद छिपकली निकल जाए। जैसे ही वह व्यक्ति अंजलि बनाकर पानी पीने बैठा तो पीछे से वैद्यजी ने जोर का थप्पड़ लगाया और कहा कि देखो, वह निकली छिपकली। कितनी बड़ी होकर निकली है। अगले दिन से वह आदमी धीरे-धीर ठीक होने लगा। देखा कि वह आदमी खूब तेजी से दौड़ रहा है। न किसी ने छिपकली पेट में जाते देखी, न बाहर आते। मनुष्य का मन ऐसा है कि यदि कोई बात इसमें बैठ गयी तो वह असंभव को भी संभव बना लेता है।

एक बार किसी व्यक्ति को निराश कर दीजिए फिर वह कुछ करने योग्य नहीं रह जाएगा। किसी स्वस्थ व्यक्ति के दिमाग में यह बात भर दीजिए कि वह बीमार है और फिर अच्छे-से-अच्छा डॉक्टर भी उसका इलाज नहीं कर पाएगा। भय का भूत मनुष्य अपने भीतर खुद जगाता है। निराशा की राक्षसी को आप अपने अंदर खुद पैदा करते हैं। चिंता की डायन कहीं और से नहीं आती, मनुष्य के अंदर से ही पैदा होती है। इसीलिए मंत्र का संदेश सुनिए, पढ़िए और उसे अमन में ले आइए, स्वयं से कहिए कि मैं साधारण नहीं हूं, असाधारण हूं। मैं राजा हूं, मैं किसी से हार नहीं सकता। यह मानकर चलिए कि भगवान् ने मनुष्य को विशेष रूप से बनाया है और वह स्वयं अपना स्वामी है।

जब तक मनुष्य अपने स्वरूप को नहीं समझता तब तक वह डर-डर कर जीता है, डरना ही जीवन की सबसे बड़ी हार है, जीवन में निर्भय होकर ही हम जीत सकते हैं। वैसे यह द्वंद्वों का संसार है, यहां सर्वत्र भय व्याप्त हैं। लेकिन भय इंसान की शक्ति भी है और शक्ति का हरण करने वाला भी है। वकील, पुलिस, डॉक्टर, ज्योतिषी मनुष्य के भय को उसके अंदर जवान बनाए रखते हैं और स्वयं उस भय का लाभ उठाते हैं, कमाई करते हैं। भय एक मानवीय कमजोरी है-सौंदर्य को बुढ़ापे का भय है, धनी को निर्धनता का भय है, बलशाली को निर्बलता का भय है- मतलब डर कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी रूप में सर्वत्र व्याप्त है। भय से बच पाना बहुत कठिन है। मनुष्य यदि भय से मुक्ति चाहते हैं तो सबसे पहले यह मानना चाहिए कि हम एक आत्मा हैं, जो नित्य है, अविनाशी है।

मंत्र का अगला भाग है- **न मृत्यवे तस्थे कदाचन।** **- शेष पृष्ठ 7 पर**

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

28 जुलाई, 2025
से
03 अगस्त, 2025

समस्त आर्य समाज श्रावणी पर्व का करें उत्साह पूर्वक आयोजन - धर्मपाल आर्य

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के निमन्त्रण एवं महासम्पर्क अभियान को बनाए जन-जन तक पहुंचाने का लक्ष्य

श्रावणी पर्व का आयोजन दिल्ली की समस्त आर्यसमाजें अपने स्तर पर पार्कों में या अन्य सार्वजनिक स्थानों पर अथवा आर्य समाजों के प्रांगण में ही आयोजित करें, उसमें एक बात ध्यान अवश्य रखें कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन का निमंत्रण भी जन-जन तक पहुंचाया जाए, अपने-अपने क्षेत्र के वरिष्ठ, विशिष्ट जनों को जिनमें क्षेत्रीय सांसद, विधायक, निगम पार्षद, एसडीएम, एस.एच.ओ. और शिक्षा विभाग से जुड़े अधिकारी एवं अनेक अन्य महानुभावों को सम्मेलन का निमंत्रण अवश्य दें।

वैदिक पर्व पद्धति के अनुसार मनाया जाने वाला प्रत्येक पर्व शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक विकास की प्रेरणा प्रदान करता है। जीवन की यात्रा में चलते-चलते किसी न किसी कारण से उदासी, निराशा और चिंता आदि का आना स्वाभाविक है। इसलिए हमारे पूर्वजों ने पर्व मनाने की परंपरा प्राचीन समय से चलाई हुई है, पर्वों में अंतर निहित प्रेरणा मनुष्य कोई न शक्ति, नया उत्साह और नया विचार देकर आगे बढ़ने और ऊंचा उठने के लिए प्रेरित करती हैं। श्रावणी पर्व का विशेष अवसर हमारे सामने है, इस पर्व में वेदों के पढ़ने, पढाने और सुनने, सुनाने का विशेष महत्व माना गया है। अपने वैदिक विज्ञान को पढ़ने, सुनने, सोचने, समझने और उस पर चिंतन, मनन करने से मनुष्य के जीवन में उन्नति, प्रगति और सफलता के द्वार खुलते है।

यह सर्वविदित ही है कि पिछले दो वर्षों से महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की लंबी श्रृंखला में हमने अनेक विश्व स्तरीय आयोजनों में सहभाग किया है और आने वाले 30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025 तक चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य और विशाल आयोजन स्वर्ण जयंती पार्क सेक्टर 10 रोहिणी में आयोजित होना सुनिश्चित है। इसके साथ ही श्रावणी पर्व का आयोजन दिल्ली की समस्त आर्यसमाजें अपने स्तर पर पार्कों में या अन्य सार्वजनिक स्थानों पर अथवा आर्य समाजों के प्रांगण में ही आयोजित करें, उसमें एक बात ध्यान अवश्य रखें कि अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन का निमंत्रण भी जन-जन तक पहुंचाया जाए, अपने-अपने क्षेत्र के वरिष्ठ , विशिष्ट जनों को जिनमें क्षेत्रीय सांसद, विधायक, निगम पार्षद, एसडीएम, एस.एच.ओ. और शिक्षा विभाग से जुड़े अधिकारी एवं अनेक अन्य महानुभावों को सम्मेलन का निमंत्रण अवश्य दें।

पिछले दो वर्षों से आर्य समाज जो जन जागृति और कल्याण का अभियान चला रहा है, उनमें वर्तमान समय परिवार, समाज, देश और दुनिया में जो चुनौतियों हैं, उनका चिंतन, रिश्ते बताइए, गले लगाइए, प्राकृतिक खेती, अंधविश्वास निवारण और नशे से युवा शक्ति को बचाना आदि को लेकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जो छोटी-छोटी पुस्तक प्रकाशित की गई है, उनको भी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के निमंत्रण के साथ वितरण करना चाहिए। 27 जुलाई 2025 को विशेष बैठक में सम्मलेन के निमंत्रण की वीडियो भी प्रस्तुत की गई है, उसे सोशल मीडिया के माध्यम प्रसारित करें, सभी आर्य समाज पूरी योजना के साथ अपने-अपने स्तर पर श्रावणी पर्वों का आयोजन अवश्य करें और अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को लक्ष्य में रखकर पूरा प्रचार प्रसार करने का प्रयास करें।

इस अवसर पर अपने घरों में, आर्य समाज में, शिक्षण संस्थानों में साप्ताहिक यज्ञ, दैनिक यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग और मानव सेवा आदि के संकल्पों को भी धारण करें और उनको पूरी निष्ठा से निभाएं। युवा पीढ़ी को यज्ञोपवीत पहनाए और उसका महत्व भी बताएं। पुराने यज्ञोपवीत को बदलकर नए धारण करें, यज्ञोपवीत के तीन धागे, सूत्रों का संदेश, आदेश, उपदेश श्रवण करें, सोचे, समझे और उन पर अमल भी करें। देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण से मुक्त होने के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार संकल्प लेकर उन्हें क्रियान्वित करें।

स्वाध्याय के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रशासन से ऑनलाइन वेद, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, महर्षि दयानंद जीवन चरित्र, आर्य समाज का इतिहास, उपनिषद, दर्शनशास्त्र, बच्चों के लिए महापुरुषों के जीवन पर आधारित कॉमिक्स और अनेक अन्य और साहित्य मंगवाकर उनका स्वाध्याय करें।

महर्षि दयानंद सरस्वती की जयंती प्रतियोगिता वाली कामिक बच्चों को अवश्य दें और आगामी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में 10 लाख रुपये की प्रतियोगिता में बच्चों को सहभागी बनाएं। इस तरह से हमारा श्रावणी पर मनाना सार्थक होगा, महर्षि दयानंद की शिक्षाओं और आर्य समाज के सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को जन-जनतक पहुंचकर कृण्वन्तो विश्वमार्यम का उद्घोष साकार होगा। श्रावणी पर्व की सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बहुत-बहुत बधाई।

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 की तैयारियों के लिए....

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी की अध्यक्षता में ज्ञान ज्योति महोत्सव समिति के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य सार्वदेशिक कोर कमेटी के सदस्य श्री प्रकाश आर्य के नेतृत्व में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, मध्य भारत, मुम्बई, राजस्थान, विदर्भ, छत्तीसगढ़, झारखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक, बंगाल, बिहार, असम, उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू कश्मीर, उत्तर प्रदेश, गुजरात, उड़ीसा, इत्यादि समस्त प्रांतीय सभाएं, परोपकारिणी सभा, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, टंकारा ट्रस्ट, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, वीरांगना दल, आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य), आर्य केंद्रीय सभा गुड़गांव, दिल्ली के वेद प्रचार मंडलों एवं अनेक अन्य संगठनों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के 2वर्षीय आयोजनों की सफलता पर सभी प्रांतीय सभाओं के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं की सराहना करते हुए कहा कि भारत के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, गृहमंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल और अनेक महानुभावों ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट की है और आर्य समाज के सेवा कार्यों की प्रशंसा भी की है, हमारे सारे आयोजन ऐतिहासिक रूप से सफल रहे हैं और विदेशों में भी अत्यंत उत्साह की लहर है। आने वाला अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन भूतों न भविष्यति का परिचायक सिद्ध होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने संपूर्ण भारत की प्रान्तीय सभाओं, आर्य समाज के संन्यासियों, विद्वानों और अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों को बधाई देते हुए हुए अपने उद्बोधन में कहा कि आज आर्य समाज नए युग की ओर बढ़ रहा है, समस्त आर्य जगत में उत्साह की लहर है और आगामी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 'कृणवन्तो विश्वमार्यम' के उदघोष को साकार करने वाला महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। आपने सम्मेलन की वैबसाइट, निमंत्रण का वीडियो एवं उदघोषक प्रेरक गीत की वीडियो का उद्घाटन भी किया। इस अवसर पर बैठक के मुख्य अतिथि एवं देश की राजधानी दिल्ली के महापौर राजा इकबाल सिंह जी का आर्य समाज की ओर से पीतवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर स्वागत किया गया। अपने उद्बोधन में महर्षि दयानंद सरस्वती जी को नमन करते हुए आर्य समाज के सेवा कार्यों और वीर बलिदानियों को स्मरण करते हुए आशवस्त किया कि दिल्ली नगर निगम एवं दिल्ली सरकार इस कार्यक्रम को हर प्रकार से सफल बनाने में आगे रहेगी। हर तरह का कार्य आप जैसे ही फोन करेंगे पूरा हो जाएगा सभी ने तालियां बजाकर उनके इस सेवा भाव का अभिनंदन किया।

इस अवसर पर श्री प्रकाश आर्य जी ने प्रांतीय सभाओं के अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक प्रांतीय

- जारी पृष्ठ 4-5-7 पर

विशाल सार्वजनिक बैठक : कुछ महत्वपूर्ण बिन्दू

- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति के तत्वावधान में भारत की लगभग सभी प्रांतीय सभाओं के अधिकारी हुए सम्मिलित।
- सम्मेलन की वेबसाइट, प्रतीक चिह्न (लोगो), विश्वव्यापी निमंत्रण हेतु संक्षिप्त वीडियो और उद्घोषक गीत का हुआ लोकार्पण।
- आर्य समाज के 150 वर्षों के इतिहास में सबसे अधिक विशाल और प्रभावी होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 की रूपरेखा हुई सुनिश्चित।
- समस्त प्रांतीय सभाओं के अधिकारी वर्ग ने तन, मन, धन से समर्पित होकर सम्मेलन को सफल बनाने का लिया संकल्प।
- अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 में आयोजित होने वाले सम्मेलन सत्रों के विषयों पर हुआ गहन चिंतन।
- सम्मेलन की संपूर्ण व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु 170 से अधिक समितियों का हुआ गठन।
- आवास, भोजन, यातायात, पार्किंग, अमानती गृह, सम्मेलन स्थल पर वृद्धजनों, दिव्यांगजनों हेतु आवश्यकता के अनुसार चलाए जाएंगे रिक्शा आदि छोटे वाहन।

④ साप्ताहिक आर्य सन्देश 28 जुलाई, 2025 से 03 अगस्त, 2025

प्रथम पृष्ठ का शेष

महासम्मेलन की तैयारियों के लिए सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की बैठक

दीप प्रज्ज्वलन करके विशाल सामूहिक कार्यकर्ता बैठक का शुभारम्भ एवं महासम्मेलन के लोगो का लोकार्पण

विशाल सामूहिक बैठक में पधारने पर दिल्ली के महापौर राजा इकबाल सिंह का स्वागत एवं सम्मान तथा आयोजकों को आर्य संन्यासियों का आशीर्वाद

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर की ओर से श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री धर्मपाल आर्य एवं श्री विनय आर्य जी का सम्मान

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 की तैयारियों के लिए आर्य समाज के विभिन्न संगठनों के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की विशाल सार्वजनिक बैठक को सम्बोधित करते आर्य नेता, अधिकारी एवं विभिन्न प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधि एवं प्रमुख कार्यकर्ता

– शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

स्वमन्तव्य-व्यामन्तव्य प्रकाश

गतांक से आगे-

4. जो इच्छा, द्वेष, सुख , दुःख और ज्ञानादि गुणयुक्त, अल्पज्ञ, नित्य है उसी को '**जीव**' मानता हूं।

5. **जीव** और ईश्वर स्वरूप और वैधर्म्य से भिन्न और व्याप्य व्यापक और साधर्म्य से अभिन्न हैं, अर्थात् जैसे आकाश से मूर्तिमान् द्रव्य कभी भिन्न न था, न है, न होगा और न कभी एक था, न है, न होगा, इस प्रकार परमेश्वर और जीव को व्याप्य व्यापक, उपास्य-उपासक और पिता-पुत्र आदि सम्बन्धयुक्त मानता हूं।

6. '**अनादि पदार्थ**' तीन हैं। एक ईश्वर, द्वितीय जीव, तीसरा प्रकृति अर्थात् जगत् का कारण इन्हीं को नित्य भी कहते हैं। जो नित्य पदार्थ हैं, उनके गुण, कर्म, स्वभाव भी नित्य हैं।

7. '**प्रवाह से अनादि**' जो संयोग से द्रव्य-गुण-कर्म उत्पन्न होते हैं, वे वियोग के पश्चात् नहीं रहते,

8.'**सृष्टि**' उसको कहते हैं, जो पृथक् द्रव्यों का ज्ञान युक्ति पूर्वक मेल होकर नानारूप बनना।

9.'**सृष्टि का प्रयोजन**' यही है कि जिसमें ईश्वर के सृष्टि-निमित्त गुण, कर्म, स्वभाव का साफल्य होना। जैसे किसी ने किसी से पूछा कि नेत्र किसलिए हैं? उसने कहा- 'देखने के लिए।' वैसे ही सृष्टि करने के ईश्वर के सामर्थ्य की सफलता सृष्टि करने में है और जीवों के कर्मों का यथावत् भोग करना आदि भी।

10. '**सृष्टि सकर्तृक**' है, इसका कर्त्ता पूर्वोक्त ईश्वर है। क्योंकि सृष्टि की रचना देखने और जड़ पदार्थ में अपने-आप यथायोग्य बीजादि स्वरूप बनने का सामर्थ्य न होने से सृष्टि का 'कर्ता' अवश्य है।

11. '**बन्ध**' सनिमित्तक अर्थात् अविद्या निमित्त से है। जो-जो पापकर्म -ईश्वरभिन्नोपासना, अज्ञानादि, सब दुःख -फल करने वाले हैं। इसलिए यह 'बन्ध ु' है कि जिसकी इच्छा नहीं और भोगना पड़ता है।

12. '**मुक्ति**' अर्थात् सर्व दुःखों से छूटकर बन्धरहित सर्वव्यापक ईश्वर और सृष्टि में स्वेच्छा से विचरना, नियत समय पर्यन्त मुक्ति के आनन्द को भोग के पुनः संसार में आना।

13. '**मुक्ति के साधन**' ईश्वरोपासना अर्थात् योगाभ्यास, धर्मानुष्ठान, ब्रह्मचर्य से विद्याप्राप्ति, आप्त विद्वानों का संग, सत्यविद्या, सुविचार और पुरुषार्थ आदि हैं।

14. '**अर्थ**' वह है कि जो धर्म ही से प्राप्त किया जाय, और जो अधर्म से सिद्ध होता है उसको 'अनर्थ' कहते हैं।

15. '**काम**' वह है कि जो धर्म और अर्थ से प्राप्त किया जाय।

16. '**वर्णाश्रम**' गुण-कर्मों की योग्यता से मानता हूं।

17. '**राजा**' उसी को कहते हैं, जो शुभ गुण, कर्म, स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपातरहित न्यायधर्म का सेवी, प्रजाओं में पितृवत् वर्ते और उनको पुत्रवत् मान के, उनकी उन्नति और सुख बढ़ाने में सदा यत्न करे।

18. '**प्रजा**' उसको कहते हैं कि जो पवित्र गुण, कर्म, स्वभाव को धारण करके, पक्षपातरहित न्याय-धर्म के सेवन से राजा और प्रजा को चाहती हुई, राजविद्रोहरहित, राजा के साथ पुत्रवत् वर्ते।

19. जो सदा विचारकर असत्य को छोड़ सत्य का ग्रहण करे, अन्यायकारियों

को हटावे और न्यायकारियों को बढ़ावे, अपने आत्मा के समान सबका सुख चाहे, सो '**न्यायकारी**' है, उसको मैं भी ठीक मानता हूं।

-क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Greatness Of Swami Dayanand

To blame Swami Dayanand ji for narrow-mindedness is illusory and false. Unity was the main goal of his teachings and the terror of Islam proved to be very helpful in uniting the Hindus ignoring caste differences. Through his efforts the Aryans or Hindus became the same society and the ideal of the Vedas became the instrument of 'mutual unification'.

-Mr. Narsingh Chintamani Kelkar

Sarvatantra Siddhanta means entire public religion which has always been followed by everyone, believes and will continue to follow, that is why it is called Sanatan Nitya Dharma, which no one can oppose. If uneducated people or people who have been misguided by any opinion, who know or believe otherwise, no intelligent person accepts it, but who is considered as Apt i.e truth believer truth speaker working for truth, philanth -ropic, unbiased scholar; Being immortal, he is not eligible for proof. Now, I publish in front of all the gentlemen who believe in the Vedas and Satyashastras and the Godly substances from Brahma to Jaiminimuni, which I also believe, and I publish and speak before all the well behaved persons. I express those of my idea which are be accepted my wise person always. I do not have the slightest intention of running any new imagination or opinion. But what is true, I want to be convinced and what is untrue. I want to leave and get rid of it, If I had been biased, I would have insisted on one of the votes propagated in Aryavarta. But I don't accept the irreligious practices in Aryavarta or other countries and I don't want to renounce the religious practices. Because doing so is out of human religion. Man should tell himself that by being contemplative, he should understand the good and bad and loss and profit of others, the unjust, should not be afraid of the strong and the righteous should be afraid of the weak. Not only this, but with all his might, the pious souls, even if they are great orphans, weak and devoid of virtues, their protection, progress, conduct, and unrighteous even if they are Chakravarti, Sanath, mighty and virtuous, yet their destruction, degradation and unpleasant behavior Sada Kiya Kare means, as far as possible, do harm to the power of the unjust and progress in the power of the righteous. No matter how much pain he gets in this work, even if he dies, but he should never be separated from this human form of religion. Shriman Maharaj Bhartrihari ji etc. have said regarding this, considering their writings to be appropriate.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025 दिल्ली

रेल यात्रा के माध्यम से दिल्ली आने वाले आर्यजन कृपया ध्यान दें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के ज्ञान ज्योति महोत्सव के आयोजनों के समापन के रूप में आयोजित **आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2025** की तिथियां **30 अक्तूबर से 2 नवम्बर 2025** (बृहस्पतिवार से रविवार) सुनिश्चित हैं। इस अवसर पर दिल्ली पधार रहे समस्त आर्यजनों की सुविधा हेतु सूचित किया जाता है कि रेलवे आरक्षण 60 दिन पूर्व आरम्भ हो जाते हैं, कृपया इसका ध्यान रखते हुए रेलवे आरक्षण कराएं। जिन स्थानों से किन्हीं विशेष दिनों में ही ट्रेन चलती हैं और उनकी ट्रेन दिल्ली 28 या 29 अक्तूबर को दिल्ली पहुंचती है तो उनके लिए विशेष रूप से सम्मेलन स्थल पर ही आवास एवं भोजन व्यवस्था 28 की रात्रि से उपलब्ध कराई जाएगी। महासम्मेलन में दिल्ली पधारने वाले समस्त आर्यजनों को दिल्ली के प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली, दिल्ली जंक्शन, हजरत निजामुद्दीन एवं आनन्द विहार रेलवे स्टेशनों से महासम्मेलन स्थल तक पहुंचाने के लिए बसों की व्यवस्था की गई है। आप कहां से, कब, कितने बजे, किस स्टेशन पर पहुंच रहे हैं, इसकी सूचना अपने ग्रुप लीडर के माध्यम से ग्रुप लीडर के नाम, पते, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्स्यों की सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय के पते '**15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001**' पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें। अपने ईमेल/पत्र पर 'आवास एवं ट्रांसपोर्ट व्यवस्था हेतु' अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था की जा सके। अधिक जानकारी लिए **9311721172** से सम्पर्क करें।

- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

पृष्ठ 5 का शेष

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय ....

सभा एक नदी की तरह आने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन रूपी समुद्र में सम्मिलित होगी, इस सम्मेलन में अत्यंत रचनात्मक कार्यक्रम आयोजित होंगे, जिनमें वर्तमान समय की चुनौतियों को भी सम्मिलित किया जाएगा।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने उपस्थित अधिकारियों को संदेश देते हुए कहा कि यह कार्यक्रम इतना विशाल और विराट है कि इसमें प्रत्येक सभा और अधिकारी की भागीदारी अत्यंत आवश्यक ओर महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम दिल्ली में हो रहा है और दिल्ली इसके लिए पूरी तरह से तैयार है।

श्री विनय आर्य जी ने बताया कि 65 एकड़ भूमि पर यह अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन होगा और इसकी सारी व्यवस्थाओं को चलाने हेतु 170 से अधिक सेवा समिति बनाई गई है, जो पूरे सम्मेलन को संचालित करेंगे। सभी अपने-अपने क्षेत्र में पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ कार्य करेंगे।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक डॉ. सत्यवीर शास्त्री जी ने कहा कि इस अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन में 20000 से अधिक आर्यवीर एवं 2000 आर्य वीरांगना पूरे भारत से आएंगे और सेवा कार्यों को आगे बढ़ाएंगे तथा व्यायाम प्रदर्शन भी भव्य और विशाल होगा।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अध्यक्ष स्वामी देवव्रत जी ने अपने संदेश में कहा कि सम्मेलन का आधार और केंद्र बिंदु महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाएं और आर्य समाज के विचारधारा होगा और यह सम्मेलन अपने आप में बड़ा अद्‌भुत और अनूठा होगा। इस अवसर पर सम्मेलन की संपूर्ण व्यवस्थाओं को लेकर जिनमें भोजन, आवास, यातायात, जन सुविधा, आर्य समाज के विद्वान, सन्यासी और सम्मेलन, कार्यक्रमों के विषयों आदि सभी पहलुओं पर गहराई से विचार किया गया।

बैठक में उपस्थित सभी प्रांतीय सभाओं के अधिकारियों ने सम्मेलन की व्यवस्था, भव्यता, सफलता आदि विषयों पर अपने, अपने विचार और सुझाव प्रदान किए, जिन्हें विचार कर प्रयोग में लाने की बात कही गई। सभी प्रांतीय सभाओं के अधिकारियों ने अपनी अपनी तरफ से सम्मेलन को सफल बनाने में तन मन धन से सहयोग देने और दल बल सहित ट्रेन भर भरकर आने की बात कही। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य, अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ, आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली,आर्य वीर दल दिल्ली, आर्य वीरांगना दल, दिल्ली के सभी वेद प्रचार मंडलों, शिक्षण संस्थानों, आर्य समाजों के अधिकारी कार्यकर्ता और सदस्यों को जो कि अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में संयोजक समितियों के अधिकारी और कार्यकर्ता नियुक्त हुए हैं, उनका परिचय भी सभा महामंत्री जी ने कराया। बहुत सकारात्मक और उत्साह के वातावरण में पहले 11 बजे से 2 बजे तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में हुई तदोपरांत 4 बजे से 8 बजे तक आर्य समाज ग्रेटर कैलाश में विस्तृत बैठक सफलता पूर्वक संपन्न हुई। सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने उपस्थित महानुभावों का आभार व्यक्त किया, शांति पाठ एवं भोजन के उपरान्त सभी आर्य महानुभाव अपने गंतव्य की तरफ प्रस्थान कर गए।

- सम्पादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर

दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

1 पुरस्कार : 1 लाख, 2 पुरस्कार : 51 हजार, 3 पुरस्कार : 31 हजार, 4 पुरस्कार : 51 सौ, पुरस्कार : 2100 नकद, छठा पुरस्कार : 1000 नकद, सातवां पुरस्कार : 500/- रुपये नकद

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

पृष्ठ 2 का शेष

श्रावणी पर्व पर क्यों आवश्यक है वेद ...

मंत्र के इस भाग में कहा गया है कि मैं मृत्यु से भी पराजित नहीं होता। इसका मतलब है कि जो राजा होने का भाव है, वह मनुष्य की आत्मा के लिए ही संबोधन है, शरीर के लिए नहीं, शरीर तो बनता रहता है, मिटता रहता है। लेकिन आत्मतत्व कभी मिटता नहीं। शरीर मिट जाएगा तब भी आत्मा रहेगा, मरकर भी मरेंगे नहीं, यह सोच मृत्यु जैसे भय को भगा सकती है।

दूसरी बात, यदि भय की आंखों में झांकेंगे तो भय भागेगा। हम जितना डरते हैं उतनी ही भय की शक्ति बढ़ती है। लेकिन जब हिम्मत और साहस से आगे बढ़ते हैं तो भय पीछे हटता है और मनुष्य में अंदर शौर्य जागृत होता है, वीरता आती है। मनुष्य को मन से, आत्मा से संकल्प लेना होगा कि आप केवल भय से लड़ ही नहीं सकते, बल्कि उसे मार भगा सकते हो, ऐसा करने के साथ ही आप में निर्भय होकर विचरण करने की क्षमता आ जाएगी।

अज्ञान से भय उपजता है और ज्ञान मनुष्य को निर्भयता प्रदान करता है। इसीलिए, ईश्वर की भक्ति और वेद ज्ञान आपको निर्भयता प्रदान करते हैं। सीधा-सा उदाहरण है यदि आपको धन कमाने की विधि का ज्ञान प्राप्त हो जाए तो आप निर्धनता से भयभीत नहीं होंगे। यदि आपको जीवन के वास्तविक अर्थ का ज्ञान हो जाए तो आप मृत्यु से कभी भय नहीं मानेंगे। ज्ञान डर को समाप्त कर देता है, इसीलिए ज्ञानी निर्भय होकर विचरण करते हैं। आगे मंत्र में कहा गया है- **सोम मा सुन्वन्तः याचता।।**

मंत्र के इस चरण का भाव है कि मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए और कल्याणकारी ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए भगवान् से याचना करें। संसार में सबसे बड़ा दाता वही है, सब उसीसे प्राप्त करके सुख संपदा के मालिक बने हैं। लेकिन एक इनसान दूसरे के सामने हाथ फैलाता है, दीन-हीन बनकर याचना करता है। वैसे मनुष्य सामाजिक प्राणी है, यहां सबको एक दूसरे से काम पड़ता है, लेकिन मनुष्य स्वार्थ के अधीन होकर जब कहीं अनावश्यक हाथ जोड़ता है, पैर पकड़ता है, कहीं बाहें फैलाता है, चापलूसी करता है, निंदा-चुगली करता है, तो सच में वह अपने गौरव से अनजान होता है। देनेवाला इन्सान भी यह नहीं समझता कि जिस दाता की देन पाकर यह स्वयं दाता बना हुआ है, मांगने वाले को अपने दर पर मांगने के लिए मजबूर करना अच्छी बात नहीं है, वह सबसे बड़ा दाता भगवान् जितना दाता का है, उतना याचक भी है।

एक बार कोई जरूरतमंद व्यक्ति किसी राजा के पास कुछ मांगने के लिए गया। जैसे ही वह राजा के पास पहुंचा तो उसने देखा कि राजा दोनों हाथ कभी जोड़ता है, तो कभी फैलाता है और कभी आसमान की तरफ देखता है तो कभी धरती को प्रणाम करता है। उस याचक को लगा कि यह राजा तो अजीब-अजीब हरकतें कर रहा है, यह मुझे क्या दे सकता है, इसका तो दिमाग भी संतुलित नहीं लगता। यह सोचते-विचारते वह वहीं पर खड़ा हुआ सब ध्यान से देखता रहा।

थोड़ी देर के बाद जब राजा अपनी पूजा-प्रार्थना समाप्त करके आया तो उसने पूछा कि बताइए आपको क्या चाहिए, क्या जरूरत है? उस साधरण व्यक्ति ने राजा को प्रणाम करते हुए सरलता से प्रश्न किया कि आप पहले यह बताएं कि आप इतनी देर से क्या कर रहे थे। राजा ने कहा मैं भगवान् से प्रार्थना कर रहा था, उस व्यक्ति ने फिर पूछा कि प्रार्थना क्या होती है, इसमें क्या करते हैं, इसको करने से क्या मिलता है। राजा ने कहा-मैं भगवान् से बल-बुद्धि, धन, साम्राज्य और अपनी प्रजा के लिए सुख-शांति मांग रहा था। उस प्रभु की प्रार्थना से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। लेकिन तुम बताओ कि तुम्हें क्या चाहिए, उस साधरण से इनसान ने कहा कि जब आप राजा होकर भी संसार के सबसे बड़े राजा से मांगते हैं, तो फिर मैं क्यों आपसे मांगू, मैं भी उस विधाता से ही मांगूगा, जिससे मांगकर आप राजा बने हैं। इसलिए इनसान दूसरे इनसान का सम्मान तो करे लेकिन अगर कुछ मांगना है, तो भगवान् से मांगे।

मंत्र में आगे कहा गया है **'न मे पूरवः सख्ये रिषाथन** जिसका अर्थ है कि परमात्मा अपने पुत्र मनुष्य को संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि मेरे (ईश्वर) के प्रति मित्र भाव को कभी समाप्त मत होने देना। मनुष्य के जीवन में एक जैसी स्थिति कभी नहीं रहती, जीवन में उतार-चढ़ाव आता ही आता है, लेकिन भगवान् को हर हाल में, हर काल में एक जैसे भाव में सर्वदा अपने अंग-संग अनुभव करना चाहिए। **-सम्पादक**

शोक समाचार

पं. वेदपाल शास्त्री जी का निधन

आर्यसमाज के विद्वान एवं आर्यसमाज झिलमिल कालोनी दिल्ली के धर्माचार्य पं. वेद पाल शास्त्री जी का का दिनांक 26 जुलाई, 2025 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 3 अगस्त, 2025 को सायं 4-5 बजे आर्यसमाज झिलमिल कोलोनी दिल्ली में में सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 28 जुलाई, 2025 से रविवार 3 अगस्त, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 31/07-01-02/08/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 जुलाई, 2025

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित एवं सफल बनाने हेतु

दिल खोलकर दान दें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 को ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित, सफल बनाने के लिए समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थानों, आर्य परिवारों एवं औद्योगिक घरानों से सहयोग की अपील की जाती है। कृपया दिल खोलकर दान दें।

अपनी दानराशि का सहयोग **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें अथवा निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा कराएं। स्कैन कोड द्वारा भी दान राशि प्रदान की जा सकती है। कृपया दान राशि जमा कराते ही डिपोजिट स्लिप/स्क्रीन शॉट **9540040388** पर व्हाट्सएप्प भेजें, जिससे आपको तत्काल दान की रसीद भेजी जा सके।

Delhi Arya pratinidhi Sabha-Doner's
A/c No. 910010008984897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

समय दानी आर्यजन कृपया ध्यान दें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 के आयोजन 30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025 की आयोजन तथा आयोजन से पूर्व तथा पश्चात् की व्यवस्थाओं तथा उसके लिए गठित होने वाली विभिन्न समितियों में सहयोग करने के लिए सभी आर्यजनों एवं कार्यकर्ताओं से समय दान करने का निवेदन किया जाता है। अत: जो आर्यजन **कम से कम 7 दिन का समय** सम्मेलन की व्यवस्थाओं में सहयोगी बनने के लिए दान करना चाहें, वे कृपया अपना नाम, मो.न. एंव विवरण तथा किन तिथियों में समय में कब से कब तक का समय दान कर सकते हैं **9311721172** पर नोट करा दें। हमारे कार्यकर्ता शीघ्र ही आपसे सम्पर्क स्थापित करेंगे। *- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति*

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

ऐतिहासिक रूप से भव्य, सफल एवं प्रेरणाप्रद बनाने हेतु

सुझाव आमन्त्रित

समस्त सुधी पाठकों, वैदिक विद्वानों, लेखकों, चिन्तकों, आर्यसमाज के हितैषी महानुभावों से अनुरोध है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल और प्रेरणाप्रद बनाने के लिए अनुभवों के आधार पर अपने उपयोगी सुझाव अवश्य प्रदान करें। आपने वर्ष 2006 के उपरान्त तथा इससे भी पूर्व में आयोजित महासम्मेलनों में भाग लिया है। इन सम्मेलनों में आपको कुछ व्यवस्थाएं अच्छी लगी होंगी तथा कुछ में सुधार की अपेक्षा भी रही होगी।

अत: आपसे निवेदन है कि आने वाले सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को ऐतिहासिक रूप से सफल और अविस्मरणीय बनाने के लिए कृपया अपने सुझाव **15 अगस्त 2025** तक भेजने की कृपा करें, जिससे उन सुझावों पर विचार करके उन्हें प्रयोग में लाया जा सके। कृपया अपने सुझाव निम्न पते पर भेजें अथवा ईमेल करें -

संयोजक समिति
आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001, मो. 9311721172
Email:aryasabha@yahoo.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह